कृषि नवाचार
हिन्दी पत्रिका
ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 03 भाग 01 अप्रैल, 2026

जैविक खेती

विपिन कुमार[1]* और हर्ष सैनी[2]
[1]बी.एस-सी (कृषि) ऑनर्स, आर.एस.एम. पी.जी. कॉलेज धामपुर, बिजनौर
[2]एम.एससी (हॉर्टिकल्चर), आर.एस.एम. पी.जी. कॉलेज धामपुर, बिजनौर
***E-mail: Yaduvanshivipin343@gmail.com**

जैविक खेती की अवधारणा

जैविक खेती एक ऐसी कृषि प्रणाली है जिसमें रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग के बजाय प्राकृतिक प्रक्रियाओं, जैव विविधता और स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार चक्रों का उपयोग किया जाता है। यह पारंपरिक ज्ञान, नवीन तकनीकों और विज्ञान का समन्वय करके पर्यावरण की सुरक्षा करता है तथा सभी जीवों के लिए बेहतर जीवन गुणवत्ता और संतुलन बनाए रखने में मदद करता है।

जैविक खेती के मुख्य सिद्धांत

1. स्वास्थ्य का सिद्धांत: मिट्टी, पौधों, पशुओं, मनुष्यों और पूरे ग्रह के स्वास्थ्य को एक साथ सुरक्षित और बेहतर बनाना।
2. पारिस्थितिकीका सिद्धांत: उत्पादन को प्राकृतिक पारिस्थितिक प्रक्रियाओं और पुनर्चक्रण पर आधारित करना तथा प्राकृतिक संतुलन बनाए रखना।
3. न्याय का सिद्धांत: ऐसे संबंध बनाना जो पर्यावरण और सभी जीवों के लिए समानता और न्याय सुनिश्चित करें।
4. देखभाल का सिद्धांत: संसाधनों का उपयोग सावधानीपूर्वक और जिम्मेदारी से करना ताकि वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों तथा पर्यावरण की सुरक्षा हो सके।

भारत में जैविक खेती से संबंधित पहल

पहला राष्ट्रीय संगोष्ठी: नई दिल्ली, भारत में वर्ष 2003 में आयोजित की गई।
राष्ट्रीय जैविक खेती परियोजना: वर्ष 2004 में शुरू की गई, जिसका उद्देश्य देश में जैविक खेती को बढ़ावा देना है।
राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम: वर्ष 2001 में भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया। इसे Agricultural and Processed Food Products Export Development Authority द्वारा लागू किया जाता है, जो वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अंतर्गत कार्य करता है।

जैविक खेती आंदोलन का प्रसिद्ध प्रयोग

लेडी ईव बालफोर, जिन्हें "द लिविंग सॉइल लेडी" के नाम से जाना जाता है, जैविक खेती आंदोलन की एक प्रमुख और अग्रणी वैज्ञानिक थीं। उन्होंने वर्ष 1943 में दालिविंग साइल नामक एक प्रभावशाली पुस्तक प्रकाशित की, जिसमें उन्होंने मिट्टी के स्वास्थ्य और जैविक खेती के महत्व को विस्तार से समझाया।
होगली प्रयोग: Haughley Experiment वर्ष 1939 में शुरू किया गया था और यह जैविक खेती और पारंपरिक (रासायनिक) खेती के बीच तुलना करने वाले सबसे पहले दीर्घकालिक प्रयोगों में से एक था।

- यह प्रयोग 40 वर्षों से अधिक समय तक चलाया गया।
- इसमें मिट्टी की उर्वरता, फसल की गुणवत्ता और उत्पादन का अध्ययन किया गया।
- इस प्रयोग से यह सिद्ध हुआ कि जैविक खेती मिट्टी की सेहत को लंबे समय तक बनाए रखने में सहायक होती है।
- इस महत्वपूर्ण प्रयोग का नेतृत्व Lady Eve Balfour ने किया था, जिसने जैविक खेती के वैज्ञानिक आधार को मजबूत किया और पूरी दुनिया में इस आंदोलन को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

भारत में जैविक खेती

राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम: भारत में जैविक खेती के विकास, मानकीकरण और प्रमाणीकरण के लिए एक महत्वपूर्ण योजना है। इसे APEDA द्वारा, जो Ministry of Commerce and Industry के अंतर्गत कार्य करता है, लागू किया जाता है।
NPOP के मुख्य उद्देश्य एवं कार्य:

- जैविक उत्पादों के लिए राष्ट्रीय मानक निर्धारित करना।
- प्रमाणन संस्थाओं को मान्यता देना।
- जैविक खेती के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देना।
- जैविक उत्पादों के विपणन एवं निर्यात को प्रोत्साहित करना।

अंतरराष्ट्रीय मान्यता

- NPOP के मानकों को European Commission और Switzerland द्वारा समतुल्य माना गया है। इससे भारत में प्रमाणित जैविक उत्पाद यूरोप में आसानी से निर्यात किए जा सकते हैं।
- इसके अतिरिक्त, भारत Canada, Japan, South Korea आदि देशों के साथ भी पारस्परिक मान्यता के लिए प्रयासरत है।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारत की स्थिति

वर्तमान समय में भारत जैविक उत्पादकों की संख्या के आधार पर विश्व में प्रथम स्थान पर है। साथ ही, जैविक कृषि भूमि के मामले में

भारत विश्व के शीर्ष देशों (लगभग द्वितीय स्थान) में शामिल है। यह दर्शाता है कि भारत वैश्विक जैविक कृषि क्षेत्र में एक मजबूत स्थान बना चुका है।

जैविक क्षेत्र (Latest 2025-26): नवीनतम उपलब्ध आँकड़ों के अनुसार भारत में कुल जैविक प्रमाणित क्षेत्र लगभग 7.3 मिलियन हेक्टेयर (73 लाख हेक्टेयर) है। इसमें -

- लगभग 44.75 लाख हेक्टेयर क्षेत्र खेती योग्य है, लगभग 28.5 लाख हेक्टेयर क्षेत्र वन एवं जंगली संग्रह का है
- यह आँकड़े दर्शाते हैं कि भारत में जैविक खेती का क्षेत्र लगातार बढ़ रहा है।

राज्यवार स्थिति (नवीनतम प्रवृत्ति): भारत में जैविक खेती के क्षेत्र में विभिन्न राज्यों की भागीदारी इस प्रकार है-

- मध्य प्रदेश में सबसे अधिक जैविक क्षेत्र पाया जाता है, जो कुल क्षेत्र का लगभग 26% है।
- महाराष्ट्र दूसरे स्थान पर है, जहाँ लगभग 22% जैविक क्षेत्र है।
- गुजरात का योगदान लगभग 15% है।
- राजस्थान में लगभग 13% जैविक क्षेत्र पाया जाता है।
- सिक्किम ने वर्ष 2016 में अपनी पूरी कृषि भूमि (75,000 हेक्टेयर से अधिक) को जैविक घोषित कर भारत का पहला पूर्ण जैविक राज्य बनने का गौरव प्राप्त किया।

जैविक किसान

भारत में वर्तमान में 23 लाख (2.3 मिलियन) से अधिक किसान जैविक खेती से जुड़े हुए हैं, जो विश्व में सबसे अधिक है। यह किसानों के बीच जैविक खेती के प्रति बढ़ती जागरूकता और रुचि को दर्शाता है।

उत्पादन: हाल के वर्षों में जैविक उत्पादन में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। 2024-25 के आसपास भारत में कुल जैविक उत्पादन लगभग 4.6 मिलियन मीट्रिक टन तक पहुँच गया है। इसमें प्रमुख उत्पाद शामिल हैं: अनाज एवं मोटा अनाज, दालें, तिलहन, कपास (फाइबर फसलें), फल, सब्जियाँ एवं मसाले और चाय, कॉफी एवं औषधीय पौधे आदि।

निर्यात (नवीनतम स्थिति 2025-26): भारत से जैविक उत्पादों का निर्यात पिछले कुछ वर्षों में उतार-चढ़ाव के बाद अब फिर से वृद्धि की ओर बढ़ रहा है। 2023-24 में भारत ने लगभग 2.61 लाख मीट्रिक टन जैविक उत्पादों का निर्यात किया, जिसका कुल मूल्य लगभग रु. 4008 करोड़ (494.8 मिलियन USD) रहा। 2024-25 में (नवीनतम उपलब्ध आँकड़े) निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई, जिसमें कुल निर्यात मात्रा: लगभग 3.68 लाख मीट्रिक टन एवं कुल मूल्यः लगभग रु. 5,394 करोड़ हैं। इसका अर्थ है कि 2024-25 में जैविक निर्यात में लगभग 30-35% की वृद्धि हुई, जो अंतरराष्ट्रीय मांग में सुधार को दर्शाता है।

मुख्य निर्यात गंतव्य देश: भारत के जैविक उत्पाद निम्न देशों में प्रमुख रूप से निर्यात किए जाते हैं: अमेरिका, जापान, यूरोपीय संघ, ब्रिटेन, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया हैं।

NPOP का नवीनतम विकास (2025 Update): Agricultural and Processed Food Products Export Development Authority द्वारा संचालित NPOP में वर्ष 2025 में महत्वपूर्ण सुधार किए गए हैं।

प्रमुख बदलावः प्रमाणीकरण प्रणाली को अधिक पारदर्शी बनाया गया। किसानों के लिए प्रक्रिया को सरल और user-friendly किया गया। अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप गुणवत्ता नियंत्रण को मजबूत किया गया। Traceability system को और बेहतर किया गया, जिससे उत्पाद की पूरी जानकारी ट्रैक की जा सके।

जैविक खेती में उपयोगी उत्पाद: जैविक खेती में रासायनिक उर्वरकों के स्थान पर प्राकृतिक एवं जैविक उत्पादों का उपयोग किया जाता है। इनमें प्रमुख रूप से निम्नलिखित उत्पाद शामिल हैं।

निष्कर्ष

पंचगव्य, सागरिका और वर्मीवॉश जैसे जैविक उत्पाद पौधों की वृद्धि, उत्पादन और गुणवत्ता बढ़ाने के साथ-साथ मिट्टी की उर्वरता और पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में सहायक हैं। जैविक खेती एक ऐसी कृषि पद्धति है जो न केवल मिट्टी की उर्वरता और पर्यावरण संतुलन को बनाए रखती है, बल्कि मानव स्वास्थ्य के लिए भी सुरक्षित और लाभकारी है। इसमें रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के स्थान पर प्राकृतिक संसाधनों और जैविक उत्पादों का उपयोग किया जाता है, जिससे भूमि की गुणवत्ता लंबे समय तक बनी रहती है। वर्तमान समय में बढ़ते प्रदूषण, मिट्टी की गिरती गुणवत्ता और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को देखते हुए जैविक खेती को अपनाना अत्यंत आवश्यक हो गया है। यह न केवल किसानों की आय बढ़ाने में सहायक है, बल्कि सतत कृषि प्रणाली को भी मजबूत बनाता है।